



॥ श्री सीता माता भजन ॥
॥ श्री सीतारामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री सीता माता भजन ॥

"जय-जय सीता जनक दुलारी"

(मुखड़ा)

जय-जय सीता जनक दुलारी,
राम हृदय की राजदुलारी।
वैदेही माँ, करुणा सागर,
भर दो झोली मेरी प्यारी॥

(अंतरा 1)

मिथिला में तुम प्रकट हुई थीं,
धरती माँ की गोद से आईं।
जनक नरेश ने प्रेम से पाला,
जग में अपनी महिमा छाई॥
भोली, निर्मल, दयामयी माता,
सबकी तुम रखवाली।

जय-जय सीता जनक दुलारी,
राम हृदय की राजदुलारी॥

(अंतरा 2)

शिव धनुष का स्वयंवर रचकर,
राम बने जीवन के साथी।
संग निभाया हर पल तुमने,
वन की कठिन डगर भी पाई॥
त्याग, तपस्या, धर्म की देवी,
जग ने महिमा गाई।

जय-जय सीता जनक दुलारी,
राम हृदय की राजदुलारी॥

(अंतरा 3)

अशोक वाटिका में बैठी,
राम-नाम का जाप किया।

हनुमत आए संदेशा लेकर,
आशा का दीपक फिर जला॥
अटल रहा विश्वास तुम्हारा,
जीती सच्चाई।

जय-जय सीता जनक दुलारी,
राम हृदय की राजदुलारी॥

(अंतरा 4)

लव-कुश की तुम प्यारी माता,
ममता का सागर कहलाती।
दीन-दुखियों पर कृपा बरसाकर,
सबकी बिगड़ी बात बनाती॥
भक्ति, शक्ति और प्रेम का अमृत,
सब पर बरसाती।

जय-जय सीता जनक दुलारी,
राम हृदय की राजदुलारी॥

(अंतरा 5)

जो भी तेरे द्वार पे आए,
खाली कोई जाए न माता।
सुख, समृद्धि, शांति प्रदान करो,
पूरो सबकी मन की बात॥
सीताराम का नाम जपें हम,
यही हमारी थाती।

जय-जय सीता जनक दुलारी,
राम हृदय की राजदुलारी॥

(समापन)

जय वैदेही, जय जनकनंदिनी,
जय श्रीराम की प्यारी।
तेरे चरणों में शीश नवाएँ,
कर दो नैया पार हमारी॥
जय-जय सीता जनक दुलारी,

राम हृदय की राजदुलारी।
वैदेही माँ, करुणा सागर,
भर दो झोली मेरी प्यारी॥

